LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

"सिद्ध साहित्य"

भारतीय धर्म साधना के क्षेत्र में सिद्धों का प्रादुर्भाव 8वीं शती के आस-पास माना जाता है। वस्तुतः बौद्ध धर्म का विकृत रूप ही सिद्ध सम्प्रदाय है। ईसा की प्रथम शताब्दी तक आते-आते बौद्ध धर्म दो शाखाओं हीनयान और महायान में विभक्त हो गया। जहाँ हीनयान में सिद्धांत पक्ष की प्रधानता थी वहीं महायान में व्यावहारिकता पर अधिक बल दिया जाता था। हीनयान केवल विरक्तों और संन्यासियों को आश्रय देता था, जबकि महायान के द्वार सबके लिए खुले थे। ऊँच-नीच, छोटे-बड़े, गृहस्थ-संन्यासी सबको निर्वाण तक पहुँचाने का दावा महायान शाखा करता था। बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार भारत से बाहर भी पर्याप्त हुआ। तिब्बत और नेपाल में यह धर्म शैव मत से प्रभावित हुआ और जनसामान्य को आकर्षित करने के लिए इसमें तंत्र, मंत्र एवं अभिचार का समावेश हो गया। इसका परिणाम यह हुआ कि बौद्ध धर्म की मूल दिशा बदल गयी तथा त्याग, तपस्या और संयम का स्थान भोग-विलास ने ले लिया। साधक 'मंत्र-जप' की ओर उन्मुख होने लगे और इस प्रकार 'महायान' ही 'मंत्रयान' बन गया। आगे चलकर इस मंत्रयान के दो भाग - वज्रयान और सहजयान हुए। इनमें से वज्रयानी ही सिद्ध कहलाए। ये मंत्र जप से सिद्धि की आकांक्षा करते थे।

सिद्धों की संख्या चौरासी (84) बताई जाती है। इनका समय 797 ई० से 1257 ई० तक माना गया है। सिद्ध लोग अपने नाम के पीछे 'पा' जोड़ते थे, जैसे - सरहपा, लुईपा, शबरपा आदि। सिद्ध प्रायः अशिक्षित हीन/नीच जातियों में से थे। इन्होंने स्त्री सेवन को अपनी साधना का अंग

बना लिया था और इस प्रकार धर्म तथा अध्यात्म की आड़ में सिद्धों ने नारी भोग आरम्भ कर दिया।

सिद्ध साहित्य अर्द्धमागधी अपभ्रंश भाषा में लिखा गया है। यह भाषा वस्तुतः हिन्दी और अपभ्रंश का मिला-जुला रूप है। सिद्ध कवियों की रचनाएँ मूलतः उपदेशपरक, नीतिपरक एवं रहस्यपरक हैं। इन कवियों की कविता में शान्त और श्रृंगार रस की प्रधानता है। प्रमुख सिद्ध कवि और उनकी रचनाएँ इस प्रकार हैं :-

सरहपा - इनका रचनाकाल 769 ई० है। इन्होंने 'दोहाकोश' नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ की रचना की। इनकी कुल रचनाओं की संख्या 32 है। इन्हें सरोज वज्र, राहुल वज्र के नाम से भी जाना जाता है।

शबरपा - शबरपा का रचनाकाल 780 ई० है। 'चर्यापद' इनका प्रसिद्ध ग्रन्थ है। ये मायामोह का विरोध करके सहज जीवन पर बल देते हैं।

लुईपा — लुईपा की कविता में रहस्य-भावना की प्रधानता है तथा इनकी कविता पहेली जैसी है।

कण्हपा — इनके द्वारा लिखे ग्रन्थों की संख्या 74 बताई जाती है। इनकी रचनाओं का प्रमुख विषय रहस्यवाद एवं दर्शन है। कण्हपा शास्त्र एवं रूढ़ियों का खण्डन करते हैं तथा सिद्धि हेतु नारी प्रेम को आवश्यक मानते हैं।

सिद्ध साहित्य की प्रवृत्तियाँ —

सिद्ध साहित्य में शास्त्रीय चिन्तन गौण है, तथा साधना पर अधिक बल दिया गया है। गुरु के महत्व को सिद्ध कवियों ने स्वीकारा है। रूढ़ियों, बाह्याडम्बरों का विरोध तथा शास्त्र के प्रति अवहेलना भाव देखने को मिलता है। सिद्ध साहित्य में रहस्यवादी भावना के

साथ-साथ योग साधना पर विशेष बल है। ब्रह्माण्ड में जो शिव और शक्ति है, पिण्ड (शरीर) में वही सहस्रार और कुण्डलिनी है। सिद्ध साहित्य में वैदिक देवताओं के प्रति अनास्था व्यक्त की गई है। ब्राह्मणवाद के प्रति अवहेलना एवं वेदों के प्रति असम्मान व्यक्त किया है। इसमें चमत्कार प्रदर्शन की भावना विद्यमान है। सिद्धों की साधना को गुह्य साधना कहा गया है, जिसके बहाने इसमें कामशास्त्र का समावेश हुआ। मुक्ति या निर्वाण को दुलना में ये सिद्धियों को प्राप्त करने पर अधिक बल देते हैं। सिद्ध साहित्य में जाति-पाँति के प्रति अनास्था व्यक्त की गई है तथा वर्ण भेद की निन्दा की गई है।

सिद्धों का बहुत कुछ प्रभाव कबीर आदि संत कवियों के काव्य पर दिखाई पड़ता है। सिद्धों की उलटबाँसियों को कबीर की उलटबाँसियों का प्रेरक समझना चाहिए। वस्तुतः संत साहित्य का प्रारंभिक बीज सिद्धों में ही मिलता है। कबीर ने जाति-पाँति का खण्डन, बाह्याडम्बरों का विरोध, गुरु का महत्व आदि बातें सिद्धों से ग्रहण की है। डॉ० रामकुमार वर्मा सिद्ध साहित्य के महत्व का उल्लेख करते हुए लिखते हैं, "सिद्ध साहित्य का महत्व इस बात में बहुत अधिक है कि उससे हमारे साहित्य के आदि रूप की सामग्री प्रामाणिक ढंग से प्राप्त होती है। भाषा विज्ञान की दृष्टि से भी यह महत्वपूर्ण है।" यद्यपि सिद्ध साहित्य में कवित्व का वह उत्कर्ष दिखाई नहीं देता जिसकी अपेक्षा साहित्य में रहती है, तथापि हिन्दी के परवर्ती साहित्य को अनेक रूपों में इस साहित्य ने प्रभावित किया है। नवीन सामाजिक चेतना

का सूत्रपात भी इसी साहित्य से हुआ, क्योंकि जनता को पहली बार जाति और वर्ण के नाम पर शोषित किए जाने की बात समझ में आई। सिद्धों की वाणी ने दलित एवं शोषित वर्ग को आशावादी सन्देश दिया तथा नवीन चेतना का सूत्रपात किया। भले ही आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने सिद्धों की बानियों की यह कहकर आलोचना की कि "वे साम्प्रदायिक शिक्षा मात्र हैं, अतः शुद्ध साहित्य की कोटि में नहीं आ सकतीं।" इसके बावजूद सिद्ध साहित्य का परवर्ती साहित्य पर व्यापक प्रभाव पड़ा है, इससे इनकार नहीं किया जा सकता